शिक्षा और भ्रष्टाचार के केंद्रस्थ 'रागदरबारी' में अभिव्यक्त भारतीय गाँव

डॉ. बबन शंकर सातपुते
सहा. प्राध्यापक, हिंदी विभाग,
मिरज महाविद्यालय, मिरज,
जिलाः सांगली (महाराष्ट्र)।

हिंदी साहित्य जगत् में श्रीलाल शुक्ल जी अपनी प्रयोगशीलता के कारण ख्यातनाम है I हिंदी साहित्य में एक व्यंग्यकार के रूप में उनका योगदान सराहनीय हैं I व्यंग्य रचनाओं के साथ साहित्य की विविध विधाओं में उनका लेखन स्तुत्य है I उनका 'रागदरबारी' उपन्यास सन्१९६८ ई. में प्रकाशित हुआ कि सन् १९६९ ई. में वह साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत हुआ I इसमें लेखक के कथाकार के साथ व्यंग्यकार दोनों भी रूप स्पष्ट ही निखरते हैं I वस्तुतः शुक्ल जी ने भारतीय मानसिकता बखूबी उद्घाटित की है I

शुक्ल जी का जन्म उत्तर प्रदेश के लखनऊ जिले में मोहनलालगंज कस्बे के पास अतरौली गाँव में सन् १९२५ ई. में हुआ I गाँव में पले हुए, बढे हुए शुक्ल जी उत्तर प्रदेश सरकार में गृह सचिव के पद पर विराजमन थे I उच्च पदस्थ होते हुए भी उनका अपने गाँव के साथ रिश्ता कायम बना रहा I परिणामस्वरूप वे एक सरकारी अधिकारी के रूप में आम जनता का दुःख और इसके साथ ही सरकार तथा अधिकारियों की उदासीनता देखते थे, अनुभव करते थे I सरकार की ओर से केवल प्रगति या विकास के नारे मात्र लगाए जाते थे I लेकिन इनसे गाँव तथा वहाँ की जनता अनभिज्ञ रह जाती है I गाँव तो समस्याओं से आवृत्त रहता है I शिक्षा का प्रश्न तथा भ्रष्टाचार तो अपनी हद पार करते हैं I शुक्ल जी का 'रागदरबारी' उपन्यास शिक्षा और भ्रष्टाचार के केंद्र में भारतीय गाँव की मार्मिक अभिव्यक्ति करता है I उसी परिप्रेक्ष्य में अनैतिकता, गुंडागर्दी, मूल्यहीनता जैसे पहलू होते हैं I

स्वातंत्र्योत्तर भारत की गाँवों के परिप्रेक्ष्य में सामाजिक, राजनीतिक, शैक्षिक तथा आर्थिक स्थिति पर व्यंग्यात्मक शैली में प्रकाश डालनेवाला 'रागदरबारी' एक क्लासिकल उपन्यास है I हिंदी उपन्यास के इतिहास में उसी दौरान व्यंग्यात्मक शैली का नया प्रयोग था I वस्तुतः यह उपन्यास भारतीय समाज की विसंगति व्यंग्यात्मक शैली द्वारा अभिव्यक्त करता है I उपन्यास के केंद्र में शिवपालगंज नामक गाँव है, जो लेखक के जन्मगाँव अतरौली के निकट ही है I वस्तुतः मोहनलालगंज नामक कस्बा ही शिवपालगंज है, जो लखनऊ के दक्षिण छोर की ओर स्थित है I हिंदी साहित्य के इतिहास चित्रण की संपूर्णता और अर्थवत्ता के कारण 'गोदान' से लेकर 'अलग अलग वैतरणी' तक सभी में भारतीय गाँवों का अनूठा चित्रण हुआ, जो कि अविस्मरणीय रहा है I वही बात 'रागदरबारी' के शिवपालगंज की है I 'रागदरबारी' में लेखक की शैली और दृष्टि बेजोड रही है I उपन्यास में गाँवों की गरीबी है, अभाव है, पिछडापन है, बिमारियाँ है, पर उनके साथ इसके पीछे की मानसिकता बखूबी उद्घाटित होती हैI हमने अंग्रेजों से आजादी हासिल की, हम मुक्त हुए I वस्तुतः हमारी गलती या चूक के कारण ही हम अंग्रेजों की गुलामी सहते रहे I इसके लिए हमारी सामाजिक व्यवस्था जिम्मेदार थी I इतना ही नहीं हमारी मानसिकता और स्वार्थांधता, अंधविश्वास उतने ही जिम्मेदार थे I इसमें हमारे नेता लोगों ने हमें केवल सपने दिखाए I एक ओर गोरे अंग्रेज चले गए, पर काले अंग्रेज हमारे सिए चढ गए I नेताओं की स्वार्थांधता, भ्रष्टता ने सामाजिक मूल्यहीनता को बढावा ही दिया I अत: प्रचार मात्र को ही बढावा मिला I शिक्षा का तो गुणात्मक स्तर काफी कम होता गया I फलत: गाँव तो समस्याओं से त्रस्त बनते जाते हैं I

आम भारतीय गाँवों की भाँति शिवपालगंज एक गाँव है I इसमें लेखक के कलात्मक मूल्य विशेष महत्त्व रखते हैं I गाँव हैं तो पंचायत है, पंचायत है तो चुनाव है, चुनाव है तो गुट है, गुट है तो स्वार्थ है, सत्तापिपासा है, जो शिवपालगंज में दृष्टव्य है I गाँव में दो गुट है, जिसमें एक बैद्य जी का और दूसरा रामधीन भाखमखेडवी का I वैद्य जी ऊपरी तौर पर शांत, सज्जन, परोपकारी दिखते हैं, पर सच में स्वार्थी, मूल्यहीन नेता का उत्तम उदाहरण है I ऐसे चालाक, खुदगर्ज, स्वार्थांध वैद्य जी भारत के हर गाँव में मिलते हैं I हर गाँव के कोने कोने में वे मौजूद हैI पहले भारत गाँवों में बसता था, आज महानगरों में स्थलांतरित हो गया है I महात्मा गांधी जी ग्रामीण भारत का दुःख दूर करना चाहते थेI फलतः उन्होंने नेता तथा बुद्धीजीवियों को गाँव की ओर चलने का नारा दिया था I परिणाम यह हुआ कि आज नया भारत शहरों में तब्दील हो गया है I आज गाँव

गरीबी, जातीयता, अशिक्षा जैसी समस्याओं से चिंतित है I लगातार चिंतन का निचोड ही लेखक द्वारा 'रागदरबारी' उपन्यास के रूप में दृष्टव्य है I

शिवपालगंज में रंगनाथ के प्रवेश से उपन्यास का आरंभ होता है I वैसे तो रंगनाथ इतिहास में एम्. ए. करता है I वह आगे रिसर्च कर रहा है I वह अपना स्वास्थ्य ठीक न होने के कारण अपने मामा वैद्य जी के गाँव शिवपालगंज पहुँचता है I वहाँ पर वह अपने मामा के बेटे रुप्पन द्वारा गाँव की राजनीति से परिचित होता है I वस्तुतः रंगनाथ के कारण शिवपालगंज की हर गतिविधि मिलती रहती है I इन सारी गतिविधियों के केंद्र में वैद्य जी रहे हैंI सच में वैद्य जी विकास की आड से गाँव में प्रभावी रहे हैं I गाँव में उसका काफी प्रभाव हैI अपने मामा की चालाकी से रंगनाथ वाकीफ हो जाते हैं I वे जानते हैं कि गाँव की भलाई तो नहीं, पर मामाजी वैद्य जी की भलाई तो निश्चित हुई है I तात्पर्य यह है कि वैद्य जी को गाँव के बीमारी लोगों की नाडी देखते देखते उनके साथ पूरे गाँव की ही नाडी की पहचान होती है I इसके साथ ही लेखक शुक्ल जी सरकारी सेवा में होने के कारण गाँव के वास्तव से बखूबी परिचित थेI अच्छी शिक्षा के संदर्भ में शिवपालगंज को केंद्र में रखते हैं I वर्तमान शिक्षा व्यवस्था पर तीखा व्यंग्य कसते हैं I "वर्तमान शिक्षा पद्धति रास्ते में पडी हुई कुतिया है, जिसे कोई भी लात मार सकता है I"[१] तात्पर्य यह है कि आज भी भारतीय गाँव तथा उनसे संबद्ध परिवेश अच्छी शिक्षा से, व्यवस्था से दूर है, वंचित है I सच्चाई यह है कि वैद्य जी कालिज अपने तरिके से चलाते हैं I अध्यापकों पर चेअरमन तथा प्रिंसिपल का दबाव रहता है I यह स्थिति देश के हर गाँव तथा शिक्षा व्यवस्था की है I

लेखक भारत की राजनीतिक स्थिति पर प्रकाश डालते हुए उनकी बुरी स्थिति भी उद्घाटित करते हैं I यूरोप जैसे देशों में देश की बागडौर युवा नेताओं के हाथों में रहती है I यहाँ भारत में बिल्कुल उलटी स्थिति है I भारत की राजनीति में जितनी अधिक उम्र होगी, नेता उतना ही अधिक योग्य, उचित समझा जाता है I उसी समझ पर शुक्ल जी व्यंग्य वसते हैं I जैसे कि "असेम्बली में जितने ही बूढे होते जाओ, जितनी ही अक्ल सठियाती जाए, उतनी ही तरक्की होती है I"[२] वस्तुतः नेता लोग ही बडे बनते जा रहे हैं, और भी बडे होते जा रहे हैं I वस्तुतः हमने रुस से पंचवर्षीय योजनाएँ लींI आम आदमी का उद्धार तो दूर, पर उनके जीवन पर कुछ भी असर नहीं पडा I सच में अमीर अमीर बनते गए और गरीब गरीबI शिवपालगंज के समझदार लोगों को केंद्र में रखते हुए लेखक करारा व्यंग्य कसते हैं I ऐसी योजनाओं की पोल खोलते हैं I अत: समझदार लोग जान गए है कि "अगर हम खुश रहें तो गरीबी हमें दुःखी नहीं कर सकती और गरीबी को मिटाने की असली योजना सही है कि हम बराबर खुश रहें I"[३] अत: किसी भी स्थिति में खुश रहना ही आम भारतियों की मजबूरी दृष्टिगत होती है I इसी में भी नेता लोग अपनी सम्पत्ति और बढाने में लगे रहते हैं I लेखक नेता तथा आम की मानसिकता, वास्तवता बयान करता है I

अत: 'रागदरबारी' उपन्यास राजनीतिक तथा सरकारी अधिकारी जैसे की भ्रष्टता की हद पार करता हैI एक ओर बैद्य जी जैसे भ्रष्टाचारी, पदलोलुप नेता है, तो दूसरी ओर कालिप्रसाद जैसे अधिकारी है, जो सरकारी ग्रांट, नए ढंग का संडास बनवाने की ग्रांट जैसी ग्रांट के रुपये हथियाने में माहिर हैं I एक ओर नेता देश को लूट रहे हैं, तो दूसरी ओर सरकारी अधिकारीI वस्तुतः भ्रष्टाचार ही देश को दीमक के भाँति खाए जा रहा है I अत: चतुर्दिक भ्रष्टाचार ही पनप रहा है I भ्रष्टता के खिलाफ लंगड का चरित्र संघर्ष विशेष के रूप में महत्त्व रखता है I लंगड और नकलनवीस में अनबनी बात से भ्रष्टता दृष्टिगत होती है I नगलनवीस के ऐलान को लंगड वही जोश में जवाब देता है I "जाओ बाबू, तुम कायदे से ही काम करोगे तो हम भी कायदे से ही काम करेंगे I अब तुमको एक कानी कौडी न मिलेगीI हमने दरख्वास्त लगा दी है I"[४], कभी न कभी तो नंबर के इंतजार में जिंदगी के सुनहरे पल निकल जाते हैं I इस देश में सामान्य दरख्वास्त के लिए तक अनगिनत चक्कर काटने पडते हैं I इसका एकमात्र कारण रिश्वत होता है I फलतः लंगड जैसे को न्याय की प्रतिक्षा करनी पडती है I भ्रष्टाचार और तिकडमबाजी के मूल पर ही उपन्यास में व्यंग्य दृष्टव्य है I "बैद्य जी इसका एक छोटा उदाहरण है I लेखक ने बैद्य जी के माध्यम से तिकडमी, स्वार्थी, सत्तालोलुप, घाघ नेता का विद्रुप चित्र प्रस्तुत किया है I वस्तुतः सभी भ्रष्टाचारों, बुराईयों और अनैतिक कार्यों के पीछे उनका हाथ रहता है I पर साथ ही उनके मुँह से प्रेम, सत्य, अहिंसा, गीता की उक्तियाँ फुलझडी की तरह निकलकर वातावरण को अलोकित करती है I"[५] वस्तुतः निष्कलंक नेता को ढूँढना वैसे तो असंभव सा हैI उसी की हा में हा भरते हुए सरकारी अधिकारी भी चल रहे हैंI

प्रस्तुत 'रागदरबारी' उपन्यास शिवपालगंज की मानसिकता के साथ वहाँ व्याप्त विसंगतियों का बोध कराता है I प्रमुख कथ्य तथा चरित्र द्वारा वहाँ का परिवेश और घोर यथार्थ पूर्णरुपेन उद्घाटित होता है I शिवपालगंज एक गाँव मात्र हैI असल में ऐसे गाँव देश के कोने कोने में हैं I वहाँ की पीडा, वेदन दरअसल देश में चतुर्दिक व्याप्त है I लेखक ने परिवेश तथा सामान्य पात्रों के माध्यम से उपन्यास को उद्देश्य रूप

अनोखी सृष्टि प्रदान की है I यह रचना क्लासिक होते हुए श्रेष्ठतम् साहित्यिक मूल्य है I कथ्य और व्यंग्य की श्रेष्ठतम् अनूठी मिसाल है I लेखक की प्रयोगधर्मिता से ओतप्रोत हैI भारतीय गाँव, उनका परिवेश मूर्त करने की सामर्थ्य से युक्तियुक्त हैI

संदर्भ सूची-

१. श्रीलाल शुक्ल, रागदरबारी, पृ. सं. १२

२. वही, पृ. सं. ५६

३. वही, पृ. सं. १५१

४. वही, पृ. सं. ३७

५. डॉ.सुरेश पाटील, श्रीलाल शुक्ल: एक अध्ययन,पृ.सं. ८६

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com

--